Toppersnotes®
Unleash the topper in you

U-TET

उत्तराखण्ड टीचर एलिजिबिलिटी टेस्ट

Uttarakhand Board of School Education (UBSE)

प्राथमिक स्तर

भाग – 2 (अ)

हिन्दी

SIERRA INNOVATIONS

CONTENTS

हिन्दी

1.	वर्ण विचार	1
2.	वर्ण विश्लेषण	5
3.	शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)	9
4.	हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण	12
5.	तत्सम – तद्भव	15
6.	देशज शब्द	17
7.	उपसर्ग	21
8.	प्रत्यय	31
9.	संधि	39
10.	समास	55
11.	संज्ञा	61
12.	सर्वनाम	63
13.	विशेषण	64
14.	क्रिया	65
15.	अव्यय/अविकारी शब्द	72
16.	पर्यायवाची	76
17.	विलोम शब्द	78
18.	वाक्य के लिए एक शब्द	84
19.	शब्द युग्म	90
20.	एकार्थी शब्द	100
21.	वर्तनी शुद्धि	107
22.	वाक्य विचार	121
23.	पद बंध	129
24.	पद परिचय	132
25.	वचन	135

26.	लिंग	136
27.	काल	141
28.	विराम चिह्न और उनके प्रयोग	143
29.	कारक एवं विभक्ति	147
30.	काव्य में भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, शिल्प सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य, जीवन दृष्टि की पहचान	150
31.	मुहावरे	154
32.	लोकोक्ति	160
33.	गद्यांश एवं पद्यांश	163

हिन्दी भाषा शिक्षण

1.	हिन्दी शिक्षण	172
2.	हिन्दी शिक्षण विधि	177
3.	भाषा शिक्षण के उपागम	202
4.	भाषा दक्षता का विकास	205
5.	भाषा कौशल	208
6.	भाषा शिक्षण में चुनौतियाँ	216
7.	शिक्षण अधिगम सामग्री, पाठ्य पुस्तक, बहुमाध्यम, अन्य संसाधन	218
8.	भाषा शिक्षण में आंकलन, मूल्यांकन, उपलब्धि परीक्षण	224
9.	सतत् एवं समग्र मूल्यांकन	232
10.	निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षण	235

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

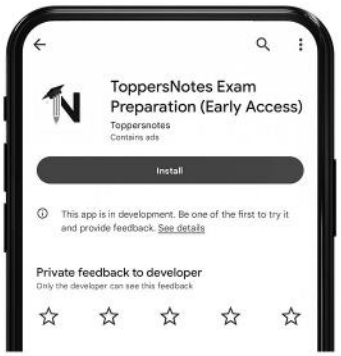

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

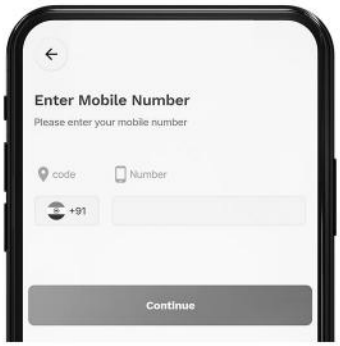

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

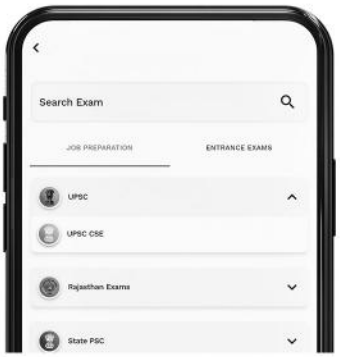

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

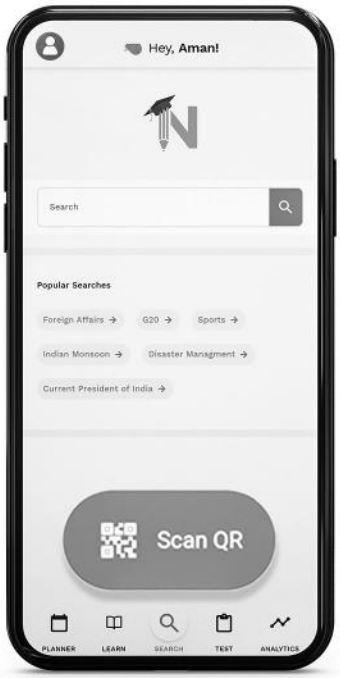

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं ।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना ।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से छोटी इकाई ध्वनि या वर्ण है ।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विशेषताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात् जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता ।

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :- क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :- 2 प्रकार है ।
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :- स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते है । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :- मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार है ।
(i) ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है ।
जैसे – अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या – 4)
नोट :- (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में दो मात्राओं का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है । स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे – अ^3, आ^3, इ^3, ई^3, उ^3, ऊ^3, ए^3, ऐ^3, ओ^3, औ^3,

(2) उच्चारण के आधार पर :- (2 प्रकार है)
(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोट – अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे – अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।
बिना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर – (3 प्रकार है)
(i) अग्र स्वर :- उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ
(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
जैसे – आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :- निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार है ।
(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना ।
जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना ।
जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार है ।
(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना ।
जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना । जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत – उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना ।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है ।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अंतः स्थ व्यंजन – (04)
(iii) ऊष्म व्यंजन – (04)

(i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ्.
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ढ् ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

(ii) अंतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4 है ।
जैसे :– य् व् र् ल्

(iii) ऊष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह ऊष्म व्यंजन कहलाता है ।

कुल ऊष्म व्यंजन – 4 है ।
जैसे – श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन – इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – क् + ष
त्र – त् + र
ज्ञ – ज् + ञ
श्र – श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार का है ।
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

i. कण्ठ स्थान – 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान – तालव्य वर्ग
सूत्र – इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान – मूर्धन्य वर्ग
सूत्र – ऋटुरषाणां मूर्धा
ऋ, ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ढ,ण) र, ष

iv. दन्त स्थान – दन्त्य वर्ग
सूत्र – लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान – ओष्ठ्य वर्ग
सूत्र – उपूपध्यानीया ना मो ष्ठौ
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ँप, ँफ)

vi. नासिका स्थान – नासिक्य वर्ण
सूत्र – नासिका अनुस्वारस्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) <u>प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण</u>
मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). <u>कंपन के आधार पर</u> – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते है ।
a) <u>अघोष वर्ण</u> – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
<u>अघोष वर्ण</u> की ट्रिक – 1,2 बजते ही ऊष्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है । प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, ऊष्म वर्ण (श,ष,स) विसर्ग
b) <u>घोष वर्ण</u> – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ङ, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
<u>घोष वर्ण</u> कि ट्रिक – 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ङ ढ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया ।
प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ङ ढ + अनुस्वार

(ii). <u>श्वास वायु के आधार पर</u> – मुख्यतः दो प्रकार के होते है ।
a) <u>अल्पप्राण</u> – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ँ ड़ , र, ल, व + सभी स्वर
<u>अल्प प्राण</u> कि ट्रिक –अल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ड़ के साथ सभी स्वर्ग गये ।
अल्पप्राण में आने वाले व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अंतःस्थ व्यंजन + ङ सभी स्वर
b) महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह
<u>महाप्राण</u> –महाम 2,4 घण्टे ढका रहने से ऊष्मा बढती है ।
महाप्राण में आने वाले वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + ऊष्म वर्ण (श,ष,स) + ह वर्ण

(iii). <u>उच्चारण के आधार पर</u> –
इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते है ।
1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ङ., ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड, ढ
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

<u>परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य (''वर्ण विचार'' से संबंधित)</u>

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है ।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है ।

	समानाक्षर स्वर	संधि स्वर
(i)	आ – अ + अ	ए – अ + इ
(ii)	ई – इ + इ	ऐ – अ – ए
(iii)	ऊ – उ + उ	औ – अ + ओ

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है ।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता हैं, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है ।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है ।

.क – .करीब
ख़ – ख़ाना
ग़ – ग़म
ड़ – .ड़ारा
.फ – .फन, .फाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ॅ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है ।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है ।
- काकल वर्ण के अन्तर्गत, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है ।
- वर्त्स वर्णो में न, स, ल को शामिल किया जाता है ।

- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जो उच्चारण करनें में सहायक हो करण कहलाते है । इसकी कुल संख्या चार होती है ।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ) (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है ।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है । क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोडा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है ।
- हल् चिह्न (्) व्यंजन के स्वर रहित होनें का परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खडी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खडी पाई हटा दी जाती है । उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है ।
  जैसे- विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि ।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है ।
4. ईषत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है ।
5. ईषद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)
6. स्क्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

नोट – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ण होते है ।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें ।

स्वर	व्यंजन	कुल
स्वर 11	व्यंजन 33	44
–	ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन)	46
–	अं, अः + (2) (अयोगवाह)	48
–	क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन	52
	.क .ख .ग .ज .फ + 5 गृहीत व्यंजन	57

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते है ।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते है ।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, झण्डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है ।
  जैसे – पढाई, लडाई, सडक, पकडना, ढूँढना आदि ।

रकार/रेफ या र संबंधित नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते है अर्थात् जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है ।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात्, पुनर्जन्म, पुनर्निमाण, आशीर्वाद ।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है ।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

वर्ण विश्लेषण

परिभाषा – शब्द में प्रयोग की गयी ध्वनियों को अलग–अलग लिखने के कार्य को वर्ण विश्लेषण कहते है।

- हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते हैं।
  (i) स्वर
  (ii) व्यंजन
- वर्ण विश्लेषण करने के लिए स्वरों की मात्राओं का ज्ञान होना बहुत जरूरी हैं।

विशेष तथ्य – शब्दों का वर्ण विश्लेषण करते समय स्वर वर्ण व व्यंजन वर्ण का विशेष ध्यान रखें।

- वर्ण विश्लेषण करते समय 'स्वर वर्ण के नीचे हल्न्त का प्रयोग नहीं किया जाता है व व्यंजन वर्ण के खडी पाई या वर्ण के नीचे हल्न्त का प्रयोग करते है।
- ध्यान देने योग्य – जैसे हम 'राम' शब्द का वर्ण विश्लेषण कर इस बिन्दू को समझनें का प्रयास करेगे – राम – र् + आ + म् + अ
  राम शब्द में रा 'र्' व्यंजन के साथ व 'म' वर्ण में म् (व्यंजन) अ (स्वर) मिला है तो इनको टूकड़ो में तोड़ने पर र् + आ + म् + अ की प्राप्ति होती है यही वर्ण विश्लेषण कहलाता है।

वर्ण विश्लेषण के उदाहरण

"अ" स्वर के उदाहरण
कमल – क् + अ + म् + अ + ल् + अ
रमन – र् + अ + म् + अ + न् + अ
हम – ह् + अ + म् + अ
कल – क् + अ + ल् + अ

"आ" स्वर के उदाहरण
रामा – र् + आ + म् + आ
माला – म् + आ + ल् + आ
हराना – ह् + अ + र् + आ + न् + आ

"इ" स्वर के उदाहरण
पिहर – प् + इ + ह् + अ + र् + अ
किताब – क् + इ + त् + आ + ब् + अ

"ई" स्वर के उदाहरण
जीवन – ज् + ई + व् + अ + न् + अ
कहानी – क् + अ + ह् + आ + न् + ई
हरी – ह् + अ + र् + ई
साही – स् + आ + ह् + ई

"उ" स्वर के उदाहरण
उपर – उ + प् + अ + र् + अ
अतुल – अ + त् + उ + ल् + अ
अनुसार – अ + न् + उ + स् + आ + र् + अ
कबुतर – क् + अ + ब् + उ + त् + अ + र् + अ

"ऊ" स्वर के उदाहरण
दूसरा – द् + ऊ + स् + अ + र् + आ
भूरा – भ् + ऊ + र् + आ
हूनर – ह् + ऊ + न् + अ + र् + अ

"ऋ" स्वर के उदाहरण
ऋषि – ऋ + ष् + इ
पितृ – प् + इ + त् + ऋ
मातृ – म् + आ + त् + ऋ

"ए" स्वर के उदाहरण
रेल – र् + ए + ल् + अ
बेकरार – ब् + ए + क् + अ + र् + आ + र् + अ
खेल – ख् + ए + ल् + अ

"ऐ" स्वर के उदाहरण
तैयार – त् + ऐ + य् + आ + र् +अ
मैदान – म् + ऐ + द् + आ + न् + अ
शैतान – श् + ऐ + त् + आ + न् + अ

"ओ" स्वर के उदाहरण
मोहर – म् + ओ + ह् + अ + र् + अ
कोबरा – क् + ओ + ब् + अ +र् + आ
कोयल – क् + ओ + य् + अ +ल् + अ
सोना – स् + ओ + न् + आ

"औ" स्वर के उदाहरण
औरत – औ + र् + अ + त् + अ
औषधि – औ + ष् + अ + ध् + इ
कौशल – क् + औ + श्+ अ +ल् + अ

संयुक्त व्यंजन के उदाहरण
उद्योग – उ + द् + य्+ ओ +ग् + अ
विद्या – व् + इ + द्+ य् +आ
न्याय – न् + य् + आ+ य् +अ
उज्जवल – उ + ज् + ज्+ व् +अ + ल् + अ

"अनुस्वार" के उदाहरण
संतोष – स् + अं + त्+ ओ +ष् + अ
नंदन – न् + अं + द्+ अ +न् + अ
वंदन – व् + अं + द्+ अ +न् + अ

"चन्द्रबिन्दु" के उदाहरण
काँस्य – क् + आँ + स्+ य् +अ
नाँद – न् + आँ + द् + अ
चाँद – च् + आँ + द् + अ
आँचल – आँ + च् + अ + ल् +अ

संयुक्त अक्षरों का विश्लेषण

क्षमा – क् + ष् + अ+ म् +आ
शिक्षा – श् + इ + क् + ष् +आ
कक्षा – क् + अ + क् + ष् +आ
त्रिशुल – त् + र् + इ + श् +उ + ल् + अ
त्रिकाल – त् + र् + इ+ क् +आ + ल् + अ
मित्र – म् + इ + त् + र् +अ
ज्ञानी – ज् + ञ् + आ + न् +ई
यज्ञ – य् + ज् + ञ् + अ
श्रोता – श् + र् + ओ + त् + आ
श्रेष्ठ – श् + र् + ए + ष् + ठ् + अ

"र्" के विभिन्न रूपों के उदाहरण

करम – क् + अ + र् +अ + म् + अ
कर्म – क् + अ + र्+ म् +अ
क्रम – क् + र् + अ + म् +अ
कृषि – कृ + ऋ + ष् + इ

वर्ण विश्लेषण के अन्य उदाहरण

वरूण – व् + अ + र्+ उ +ण् + अ
प्राथमिक – प् + र् + आ + थ् +अ+ म् + इ + क् + अ
फेन – फ् + ए + न् + अ
भगवान – भ् + अ + ग्+ अ +व्+ आ + न् + अ
श्रमदान – श् + र् + अ+ म् +अ+ द् + आ + न् + अ
संतान – स् + अं + त् + आ +न् + अ
साक्ष्य – स् + आ + क्+ ष् +य्+ अ
यश – य् + अ + श्+ अ
पत्र – प् + अ + त् + र् +अ
तितली – त् + इ + त्+ अ +ल् + ई
दामोदर – द् + आ + म्+ ओ +द्+ अ + र् + अ
आरक्षण – आ + र् + अ+ क् +ष् + अ + ण् + अ
विज्ञान – व् + इ + ज्+ ञ् +अ+ न् + अ
आँख – आँ + ख् + अ
अवगुण – अ + व् + अ+ ग् + उ + ण् + अ
इन्तजार – इ + न् + त् + अ +ज् + आ + र् + अ
त्योहार – त् + य् + ओ + ह् + आ + र् + अ
गोरव – ग् + ओ + र्+ अ +व् + अ
तोंद – त् + ओं + द्+ अ
दण्डक – द् + अ + ण्+ ड् +अ+ क् + अ
नाटकीय – न् + आ + ट्+ अ +क् + ई + य् + अ
उधार – उ + ध् + आ+ र् +अ
एकाग्र – ए + क् + आ + ग् +र् + अ
ऋग्वेद – ऋ + ग् + व्+ ए +द् + अ
ओंकार – ओं + क् + आ+ र् +अ
कछुवा – क् + अ + छ्+ उ +व् + आ

नियोजक – न् + इ + य्+ ओ +ज् + अ + क् + अ
परिपूर्ण – प् + अ + र्+ इ +प् + ऊ + र् + ण् + अ
परिभाषा – प् + अ + र्+ इ +भ् + आ + ष् + आ
कागज – क् + आ + ग्+ अ +ज् + अ
विश्राम – व् + इ + श् + र् +आ + म् + अ
आँचल – आँ + च् + अ+ ल् +अ
सफलता – स् + अ + फ्+ अ +ल् + अ + त् + आ

शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण)

- शब्दों के संग्रह को ही शब्दकोश कहते हैं।
- शब्दकोश में शब्दों का इस प्रकार संग्रह किया जाता है कि उनका एक निश्चित क्रम बना रहे।
- शब्दकोश में शब्दों को लिखने वाले को हिन्दी वर्णमाला का गंभीर ज्ञान होना आवश्यक है। उसे शब्दों के उच्चारण तथा किसी शब्द में प्रयुक्त वर्गों के क्रम का भी स्पष्ट ज्ञान होना जरूरी हैं।

1. शब्दकोश में सबसे पहले अं/अँ, अः (बिन्दु, चन्द्रबिन्दु) से शुरु होने वाले शब्दों को रखा जाता है।
   जैसे – अंबर, अलख
   अंबर – अं + ब् + अ + र् + अ
   अलख – अ + ल् + अ + ख् + अ
2. अं/अँ के बाद अन्य स्वर वर्ण आते हैं।
   जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ
3. स्वरों के बाद व्यंजन आते हैं।
4. क्ष, त्र, ज्ञ संयुक्त व्यंजन है इनमें इन वर्णों का उद्‌भव निम्न वर्णों के मिलन से हुआ है–
   क्ष – क् + ष् + अ
   त्र – त् + र् + अ
   ज्ञ – ज् + ञ् + अ
   श्र – श् + र् + अ
   अतः क्ष का स्थान 'क' के बाद त्र का स्थान 'त' के बाद ज्ञ शब्द को 'ज' के बाद रखा जाता है।
   व श्र को ष के बाद क्रम दिया गया है।

क	क्ष	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	ज्ञ	झ	ञ
ट	ठ	ड(ड़)	ढ(ढ़)	ण	
त	त्र	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म	
य	र	ल	व		
श	श्र	ष	स	ह	

- ड़ को ड के बाद व ढ़ को ढ के बाद क्रम स्थान दिया गया है।
- र की मात्रा वाले अक्षरों को उच्चारण के अनुसार रखा जाता है। जैसे–'र्क' 'कृ' 'क्र'
- मानक शब्दकोश के अनुसार दूसरे अक्षर का क्रम निम्न प्रकार से होता है।
  अं/अँ अक, अख, अग, अघ .... अह।

उपर्युक्त क्रम के बाद प्रथम अक्षर पर मात्रा वाले शब्दों का क्रम रहता है। का, कि, की, कु , कू।
मात्राओं के बाद संयुक्त अक्षर अपने क्रम के अनुसार आते हैं। जैसे– क्क, क्ख, क्त, ...।

1. अंक, आँख, अहि, अंकित, अक्ष, अक्षर, अमन, अतुल, अनिल शब्दों का सही क्रम निर्धारण होगा।

अंक –	अं + क् + अ	1
आँख –	आं + ख् + अ	9
अहि–	अ + ह् + इ	8
अंकित –	अं + क् + इ + त् + अ	2
अक्ष –	अ + क् + ष् + अ	3

अक्षर –	अ + क् + ष् + अ + र् + अ	4
अमन –	अ + म् + अ + न् + अ	7
अतुल –	अ + त् + उ + ल् + अ	5
अनिल –	अ + न् + इ + ल् + अ	6

व्याख्या

सबसे पहले अनुस्वार वर्ण (अं) को शब्दकोश कर्म में रखा जाता है तो अंक, अंकित शब्द आएंगे पर इनमें से निर्धारण करने पर अंक (अ + क् + अ) से बना है अंकित (अं + क् + इ + त् + अ) से बना है तो अंक में क् + के बाद अ होने पर पहले व अंकित में अं के बाद इ के आनें से अंकित बाद में आता है। इसके बाद अक्ष, अक्षर शब्द आयेंगें क्योंकि अक्ष शब्द (अ + क् + ष् + अ) से बना है इसके बाद क्रमशः वर्णों के अनुसार अतुल, अनिल, अमन, अहि, आँख शब्द आएंगें।

निर्धारण

अंक ⟶ अंकित ⟶ अक्ष ⟶ अक्षर ⟶ अतुल ⟶ अनिल ⟶ अमन ⟶ अहि ⟶ आँख होगा।

2. करम, कृषि, कर्म, कातर, क्रम, क्या, कुकर, केला, कोरम का क्रमशः स्थान होगा –

करम–	क् + अ + र् + अ + म् + अ	1
कृषि–	क् + ऋ + ष् + इ	5
कर्म–	क् + अ + र् + म् + अ	2
कातर–	क् + आ + त् + अ + र् + अ	3
क्रम–	क् + र् + अ + म् + अ	9
क्या–	क् + य् + आ	8
कुकर–	क् + उ + क् + अ + र् + अ	4
केला–	क् + ए + ल् + आ	6
कोरम–	क् + ओ + र् + अ + म् + अ	7

सही क्रम

करम ⟶ कर्म ⟶ कातर ⟶ कुकर ⟶ कृषि ⟶ केला ⟶ कोरम ⟶ क्या ⟶ क्रम

3. विश्राम, अँधेरा, प्रेम, पृष्ठ, कर्ता, कर्त्तव्य, उत्कंठा, क्षमा, त्रिया, समीप को क्रमशः रखो।

विश्राम –	व् + इ + श् + र् + आ + म् + अ	9
अँधेरा –	अँ + ध् + ए + र् + आ	1
प्रेम –	प् + र् + ए + म् + अ	8
पृष्ठ –	प् + ऋ + ष् + ठ् + अ	7
कर्ता –	क् + अ् + र् + त् + आ	3
कर्तव्य –	क् + अ + र् + त् + व् + य् + अ	4
उत्कंठा –	उ + त् + क् + अं + ठ् + आ	2
क्षमा –	क् + ष् + अ + म् + आ	5
त्रिया –	त् + र् + इ + य् + आ	6
समीप –	स् + अ + म् + ई + प् + अ	10

सही क्रम

अँधेरा ⟶ उत्कंठा ⟶ कर्ता ⟶ कर्त्तव्य ⟶ क्षमा ⟶ त्रिया ⟶ पृष्ठ ⟶ प्रेम ⟶ विश्राम ⟶ समीप

निम्न में से सबसे पहले आने वाला शब्दकोशीय शब्द है।

उद्योग, उधार, उदबुद्ध, उपकार

उद्योग –	उ + द् + य् + ओ + ग् + अ	2
उधार –	उ + ध् + आ + र् + अ	3
उदबुद्ध –	उ + द् + अ + ब् + उ + द् + ध् + अ	1
उपकार –	उ + प् + अ + क् + आ + र् + अ	4

सही क्रम

(सबसे पहले) उदबुद्ध ⟶ उद्योग ⟶ उधार ⟶ उपकार (सबसे बाद में)

निम्न में से कौनसा शब्द सबसे अन्त में आएगा।

निर्दोष, निष्पक्ष, निष्ठुर, निर्दय

निर्दोष –	न् + इ + र् + द् + ओ + ष् + अ	2
निष्पक्ष –	न् + इ + ष् + प् +अ + क् + ष् + अ	4
निष्ठुर –	न् + इ + ष् + ठ् + उ + र् + अ	3
निर्दय –	न् + इ + र् + द् + अ + प् + अ	1

सही क्रम

निदर्य (1) ⟶ निर्दोष (2) ⟶ निष्ठुर (3) ⟶ निष्पक्ष (4)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

हिन्दी भाषा में शब्दों का मानकीकरण

मानवीकरण का अर्थ – 'त्रुटि रहित या श्रेष्ठ
परिभाषा – लिपि के विविध स्तरों पर पाई जाने वाली विषम रूपता को दूर कर उसमें एकरूपता लाना ही मानकीकरण है।
एक ध्वनि को अंकित करने के लिए विविध लिपि चिह्नों में से एक को मान्यता दी जाती है।
जैसे – देवनागरी लिपि मे निम्न वर्ण द्विविध प्रकार से लिखे जाते है।

अमानक रूप		**मानक रूप**
अ	–	अ
झ	–	झ
ण	–	ण
ख	–	ख
ध	–	ध
भ	–	भ
ल	–	ल

हिन्दी भाषा में मानकीकरण युक्त शब्दावली
स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ,
अनुस्वार – अं
विसर्ग – अः
अनुनासिक – अँ
मात्राएँ – ा, ि, ी, ु ू ृ े ै ो, ौ
व्यंजन – क, ख, ग, घ, ड.
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म
श, ष, स, ह
संयुक्त व्यंजन – क्ष (क्+ष), त्र (त्+र), ज्ञ (ज्+ञ), श्र (श्+र)

अमानक		**मानक**
क्ष	–	क्ष
त्र	–	त्र
ज्ञ	–	ज्ञ
श्र	–	श्र

- ध्वनियों के उच्चारण मे भी एकरूपता लानी आवश्यक है। क्षेत्रीय उच्चारण के कारण लोग अलग–अलग ढंग से एक ही ध्वनि का उच्चारण करते है।
  जैसे – पइसा, पाइसा, पैसा
  इनमें से पहला, दूसरा उच्चारण अमानक व केवल तीसरा उच्चारण मानक है।
- भय्या को भैया, गवय्या को गवैया, रुपइया को रुपैया कव्वा को कौवा लिखा जाना चाहिए।
- ड. छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह के संयुक्ताक्षर हलंत (्) लगाकर बनाने से ही मानक शब्द बनते है।
  जैसे – बट्टर, बूड्ढा, कद्दू, चिह्न
- वर्गो के पंचमाक्षर के बाद यदि उसी वर्ग का कोई वर्ण हो तो वहाँ अनुस्वार का प्रयोग ही करना चाहिए।

जैसे – वंदना, हिंदी, चंदन, अंत, गंदा, ठंडा, गंगा

नोट – यदि पंचमाक्षर के बाद अन्य वर्ग का वर्ण या वही पंचमाक्षर फिर से आए तो वह अनुस्वार में नहीं बदलेगा।

जैसे – जगन्नाथ, वाङ्मय

- संबोधन के लिए प्रयुक्त पदों के बहुवचन रूप में अनुनासिक का प्रयोग नहीं किया जाता है।
  जैसे – भाइयों, बहनों का प्रयोग जब संबोधन के लिए होगा तो ये भाइयो, बहनो बन जायेंगे।
- वर्तनी की एकरूपता भी भाषा की शुद्धता के लिए परम आवश्यक है। मानक रूप में ई, यी, ये, ए के प्रयोग कहाँ करने चाहिए और कहाँ नहीं –
  - (i) संज्ञा शब्दों के अन्त में 'ई' का प्रयोग होना चाहिए 'यी' का नहीं
    जैसे – भलाई, बुराई, मिठाई, लड़ाई, खुदाई, पढ़ाई
  - (ii) जिन क्रियाओं के भूतकालिक एकवचन रूप के अंत में 'या' आता है, उसके बहुवचन रूप में 'ये' और स्त्रीलिंग रूप में 'यी' का प्रयोग उचित है।
    जैसे – आया – आयी – आये
    गया – गयी – गये
  - (iii) जिन क्रियाओं के भूतकालिक पुल्लिंग एक वचन के अंत में 'आ' आता है, उसके बहुवचन रूपों में 'ए' और स्त्रीलिंग रूपों में 'ई' का प्रयोग उचित है।
    जैसे – हुआ – हुई, हुए शुद्ध प्रयोग है।
  - (iv) विधि क्रिया और अव्यय में 'ए' का प्रयोग ही उचित है।
    जैसे – चाहिए, दीजिए, लीजिए, कीजिए, पीजिए, इसलिए, के लिए
  - (v) अव्यय शब्द सदैव अलग करके लिखे जाएँ
    जैसे – अभी–अभी, आज तक
  - (vi) हिन्दी में विभक्ति चिह्न संज्ञा शब्दों से पृथक तथा सर्वनाम शब्दों के साथ जोड़कर लिखे जाएँ।
    जैसे – मनीष ने, रमन का, उसने, हमने
  - (vii) पूरे पदों में प्रति, मात्र, यथा आदि शब्दों को पृथक से नहीं लिखा जाता है।
    जैसे – प्रतिदिन, प्राणिमात्र, यथाशक्ति
  - (viii) संस्कृत के जो शब्द विसर्ग युक्त है यदि वे तत्सम रूप में हिन्दी में लिखे गये हो तो विसर्ग सहित लिखे जाने चाहिए, किन्तु यदि तद्भव रूप में प्रयुक्त हो तो बिना विसर्ग के भी काम चल सकता है।
    जैसे – (दुःख) तत्सम रूप में, दुख – तद्भव रूप में } दोनों का प्रयोग ठीक है।
  - (ix) पूर्व कालिक 'कर' प्रत्यय क्रिया से मिलाकर लिखा जाए।
    जैसे – नहाकर, लिखकर, पढ़कर, खेलकर
  - (x) हिन्दी में 'द्' से बनने वाले सभी शब्द मानक रूप में हलन्त रूप में लिखे जाएँ –
    जैसे – विद्या, द्य, द्व, विद्यालय
- हिन्दी के संख्यावाचक शब्दों की वर्तनी का मानकीकरण हिन्दी निदेशालय ने किया। इनमें मानक शुद्ध रूप निम्नवत् है।

एक	ग्यारह	इक्कीस	इकतीस	इकतालीस	इक्यावन	इकसठ़
दो	बारह	बाईस	बत्तीस	बयालीस	बावन	बासठ़
तीन	तेरह	तेईस	तैतीस	तैतालीस	तिरपन	तिरसठ़
चार	चौदह	चौबीस	चौंतीस	चवालीस	चौवन	चौंसठ़
पाँच	पंद्रह	पच्चीस	पैंतीस	पैंतालीस	पचपन	पैंसठ़
छः, छह	सोलह	छब्बीस	छत्तीस	छियालीस	छप्पन	छियासठ़

सात	सत्रह	सत्ताईस	सैंतीस	सैंतालीस	सतावन	सड़सठ
आठ	अठारह	अठाईस	अड़तीस	अड़तालीस	अठावन	अड़सठ
नौ	उन्नीस	उनतीस	उनतालीस	उनचास	उनसठ	उनहत्तर
दस	बीस	तीस	चालीस	पचास	साठ	सत्तर

इकहत्तर	इक्यासी	इक्यानवे
बहत्तर	बयासी	बानवे
तिहत्तर	तिरासी	तिरानवे
चौहत्तर	चौरासी	चौरानवे
पचहत्तर	पचासी	पचानवे
छिहत्तर	छियासी	छियानवे
सतहत्तर	सतासी	सतानवे
अठहत्तर	अठासी	अठानवे
उनासी	नवासी	निन्यानवे
अस्सी	नब्बे	सौ

- कुछ क्रिया रूपों में भी मानकीकरण किया गया है।

अशुद्ध रूप	**शुद्ध रूप**
करा	किया
होएंगे	होंगे
होयगा	होगा

- नासिक्य व्यंजन जहाँ स्वतंत्र रूप से संयुक्त हुए हो वहाँ से अपने मूल रूप में लिखे जाने चाहिए, अनुस्वार के रूप में नहीं।
  जैसे – अन्न, गन्ना, उन्मुख, सम्मति, सन्मति।
- 'क' से बनें संयुक्ताक्षर निम्न रूप में लिखे जाने चाहिए।

जैसे	**अमानक**	**मानक**
	सुक्ति	सुक्ति
	मुक्ति	मुक्ति
	व्यक्ति	व्यक्ति
	संयुक्त	संयुक्त

- केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने देवनागरी लिपि तथा हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण का प्रकाशन 1983 ई. में किया गया।

तत्सम - तद्भव

शब्दों को अलग-अलग रूपों में रखा जा रहा है-

1. विकास या उद्गम की दृष्टि से शब्द-भेद

इस दृष्टि से शब्दों को चार वर्गों में रखा गया है-

(क) तत्सम शब्द - वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं । अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति-चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते हैं और हिंदी में वे उनसे रहित । जैसे-

संस्कृत में कर्पूरः, पर्यङ्कः, फलम् ज्येष्ठः
हिंदी में कर्पूर, पर्यङ्क, फल ज्येष्ठ

(ख) तद्भव शब्द - (उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने हैं और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते हैं । जैसे-

कर्पूर > कपूर
पर्यङ्क > पलंग
अग्नि > आग आदि ।

नोट - नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है इन्हें देखें और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है ?

तत्सम-तद्भव

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लू	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गदहा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लूक	भालू	श्वसुर	ससुर
श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग/सौभाग्य	सुहाग
कर्म	काम	हास्य	हँसी
स्नेह	नेह	कूप	कुआँ
लोक	लोग	कातर	कायर
कुठार	कुल्हाडा	शिक्षा	सीख
शाक	साग	पक्व	पक्का
गणना	गिनती	इष्टिका	ईंट

श्वश्रू	सास	काक	काग
विष्ठा	बीठ	भित्ति	भीत
कज्जल	काजल	शर्करा	शक्कर
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	मालिनी	मलिन
अगम्य	अगम	नव्य	नया
ताम्र	ताँबा	पौत्र	पोता
प्रस्तर	पत्थर	शया	सेज
मृत्यु	मौत	स्तन	थन
शृंगार	सिंगार	मस्तक	माथा
स्वामी	साईं	हरिद्रा	हल्दी
चंचु	चोंच	अपूप	पूआ
प्रिय	पिया	शृंखला	सौंकल
कारवेल	करेला	चतुष्पादिका	चौकी
मृतिका	मिट्टी	अर्द्धतृतीय	ढाई
पर्यंक	पलंग	शुष्क	सूखा
कूट	कूडा	क्षीर	खीर
खर्पर	खपरा	घट	घडा
चणक	चना	काया	काय
पक्ष	पंख	सप्त	सात
अक्षत	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्राता	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला	लाक्षा	लाख
धरित्री	धरती	अक्षार	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	दधि	दही
याचक	जाचक	ग्राहक	गाहक
उपवास	उपास	अट्टालिका	अटारी
निर्वाह	निवाह	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर
पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस